29.10.67 ओमशांति रात्रीक्लास

अनुभव सुनाया बच्चों ने कि मधुबन में क्या2 मीठा लगता है। तुम बच्चे जानते हो कि अब शांतिधाम जा रहे हैं। तुम्हारे सिवाय कोई नहीं जिसको यह पता है। तुम यही सुनते रहेंगे कि अब बाप को याद करते2 घर जाना है। पुरानी दुनियां अच्छी नहीं लगती। दिल होती है घर जावेंगे। कब2 वैराग आता है। बस, शांत में जाकर बैठें। .....वैराग आता है। दुनियां से दिल उठ जाता है। काम–काज भी करते रहते हैं ;परंतु आत्मा उपराम। मैं उपराम हूं। इस पुरानी झूठी दुनियां में अब अच्छा नहीं लगता है। मालूम तो पड़ा अब वापस जाना है। वहां अपरमअपार सुख है। बहुत है। बाप नया महल बनाता है तो खुशी तो होती है ना। गरीब से साहुकार बनते हैं तो गरीबी याद तो रहती है ना। तुम बच्चों को अब इस पुरानी दुनियां से वैराग है। बाकी थोड़ा दिन है। अब जाकर अपने घर में विश्राम लूं। दिल चाहता है कि अब विश्राम पावें। जैसे बाबा कहते हैं ना बच्चे यहां रिफ्रेश होते हैं। विश्राम भी पाते हैं। शांति–सुख पावेंगे। दुःख की बात नहीं। ना बीमारी आदि होगी। इसलिए इस दुनियां से वैराग आता है। सर्विस तो करनी है। बुद्धि में है कि अब मौत है। वैराग आता है विश्राम पाने लिए। आधा कल्प दुःख में ठोकरें खाई हैं ,छी2 हुए हैं। अब बाप सामने बैठे हैं ना। बच्चों को स्मृति आती है कि हम विश्व का मालिक थे। अब फिर बनते हैं। बाबा ने इस दुनियां से निकाला है। भक्तिमार्ग का प्रभाव भी बहुत है ना। भक्ति में बड़ी खुशी है। अब हम समझते हैं कि भक्ति से तो नीचे ही गिरे हैं। अब जाते हैं अपने घर। कोई से दिल नहीं लगती। वहां हम स्वर्ग में जाते हैं। कहां यह नर्क का किचरा। तुम हो राजयोगी, राजऋषि भी हो। ऋषि तपस्वी होते हैं। तपस्या को यात्रा भी कहा जाता है ना। तुम जानते हो। और कोई को रास्ते का पता ना है। ठोकरें खाते रहते हो। आगे मेज़ बनाते थे। अब तुम समझते हो कि भक्तिमार्ग में दर2 ठोकरें खाते हैं। बाप समझाते हैं कि भक्ति की बाउंडरी अब क्रॉस कर इस पार जाते हो। भक्ति के पीछे है ज्ञान। दिन। तो अब दिल हो तो अब उस पार जायें। यहां तो बहुत हंगामा है। खिट–पिट बढ़ेगी जरूर। शांत वाले को भी अशांत करेंगे। नैचुरल कैलेमिटीज भी बैठे2 अशांत कर देगी। कहीं भी सुख नहीं होगा। कहीं भी सुख नहीं होगा पिछाड़ी के समय। बच्चों को यह याद रहना चाहिए। शांत करके बैठना नहीं है। कर्म तो करना है ना। यह बेहद का नाटक है 5000वर्ष का। इसमें 4/5 घंटे सर्विस है। इसमें 84 जन्मों की सर्विस है। हमको यह पार्ट जरूर बजाना है। यह भी अविनाशी है। कब पुराना नहीं हो सकता। हार और जीत का नाटक है। तुम बच्चों को निश्चय है। जास्ती मेहनत करेंगे तो उंच पद पावेंगे। भक्ति जास्ती की होगी तो ज्ञान भी बहुत उठावेंगे। बाप कहते हैं कि शंकराचार्य भी मेरी भक्ति करते हैं। तुम बच्चों द्वारा मालूम पड़ेगा कि अब बाप आये हैं ले जाने। सतयुग में सब होते हैं पूज्य ,पवित्र। यहां हैं पुजारी, अपवित्र। कर्म भी जरूर करना है। जानते हो कि हम याद की यात्रा पर हैं। खुशी भी होती है। स्टुडेंट लाइफ इज दी बेस्ट लाइफ। अलबेले रहते हैं फिर तो परिवार की वृद्धि होने पर अपने ही जाल में फंस जाते हैं। एक से दो,फिर 4, 6 हो जाते हैं। वहां सुख भी है और बर्डन(बोझा) भी कम है। इस समय एमऑब्जेक्ट सामने खड़ा है। पुत्रवान भव, आयुष्वान भव तुम बन जाते हो। सन्यासी लोग आशीर्वाद करते हैं। वास्तव में सन्यासियों को आशीर्वाद करने का हक नहीं है। पुत्रवान भव ,धनवान भव ,आयुष्वान भव यह आशीर्वाद कैसे कर सकेंगे?परंतु उनके आगे माथा टेकते हैं तो कह देते हैं। बाप आशीर्वाद नहीं करते। समझाते हैं कि सतयुग में आयु बड़ी होती है। बच्चा भी एक होता है। वहां पवित्र हैं। अब तुम पुरुषार्थ करते हो सतोप्रधान बनने लिए। तो आयु बढ़ जावेगी। और कोई उपाय नहीं है आयु बढ़ाने का। बाप को याद करने से तो तुम सतोप्रधान बन ही जावेंगे। सम्पत्ति तो

एक्सचेंज करते ही हैं। भक्तिमार्ग में यह करते आये हो। ईश्वर अर्थ देते हैं ना। यहां तो स्थापना हो रही है। सुदामा ने चावल दिये तो महल मिल गया 21जन्मों लिए। भक्तिमार्ग में तो इतना मिल न सके। बहुत2 फर्क है। बच्चों को बुद्धि में यह रहे हक अब नाटक पूरा होता है। हम जाते हैं अपने घर। यह भूलो मत। गफलत में मत आओ। कल्प2 तुम राम द्वारा जीत रावण द्वारा हार खाते हो। यह सलोगन भी लिखना चाहिए कि मनुष्य एक्टर होकर भी सृष्टि की आ.म.अं. को नहीं जानते हैं, वो ब्लाइंट हैं तो मनुष्य जागेंगे। अर्थ तो समझा सकते हो। विराट रूप भी है। ब्राह्मण कुल, दैवी कुल,क्षत्रिय,वैश्य ,शूद्र कुल। यह है बाजोली। आगे तो बाजोली ही करते2 तीर्थों पर जाते थे।

31.10.67 रात्रीक्लास– जैसे तुम बच्चे इस दुनियां को भूलते जाते हो वैसे ही कोशिश की जाती है सब भूलने की। यह तो जैसे कि भूले ही हुए हैं। कब्रिस्तान से दिल तो लगाना नहीं है। अब बच्चे सुख–शांति की यात्रा तरफ जा रहे हैं जहां से फिर लौटना नहीं है। तुम यात्रा पर चले जावेंगे। फिर नई दुनियां में आकर पहुंचेंगे। यह तुम बच्चों की बुद्धि में है। समझाया जाता है तो भी समझने में कितना समय लगता है। प्रदर्शनी में ओपीनियन आदि लिखकर देते हैं। बहुत अच्छा2 भी कहते हैं ;परंतु यह नहीं समझते हैं कि बाप से वर्सा ले रहे हैं विश्व का मालिक बनने। यह बुद्धि में नहीं बैठता है कि बाप विश्व का मालिक बना रहे हैं। यह तो कुछ समझा ही नहीं। ल.ना. विश्व का मालिक थे ना। अब योगबल से फिर बन रहे हैं। बाप ही विश्व का मालिक बनाते हैं। किसी की भी बुद्धि में नहीं बैठता है तो जरूर कुछ समझाने वालों का रोला है। बताना है कि बाप आया हुआ है विश्व का मालिक बनाने। अब याद की यात्रा से हम यह बनने पुरुषार्थ कर रहे हैं। तुमको भी करना चाहिए। लिखे कि यह बहुत अच्छा समझाया कि हम भी याद करने लग पड़े। तो क्या समझाने की भूल है वा तकदीर में नहीं है?कितना सहज समझाया जाता है। इनका राज्य था। चित्र भी है। यह विश्व के मालिक थे। आदि स.दे.दे. धर्म था। फिर चक्र रिपीट होना है। बाप हमको राजयोग सिखा रहे हैं। तुम भी पढ़ो। बाप कहते हैं कि मामेकम् याद करो। तब तुम पावन बनेंगे। इतनी सहज बात बुद्धि में नहीं बैठती। वो योगबल नहीं है। बाबा अक्सर करके यही रोला निकालते हैं। याद की यात्रा में नहीं रहते। देहअभिमान में रहने कारण कोई को तीर लगता नहीं। कट खाई हुई तलवार ठीक चलती नहीं। मेहनत भी याद की यात्रा में है। यह तो जरूर है कि जो याद की यात्रा में रहेंगे वो अच्छा पद पावेंगे। बच्चों को बाप जास्ती तकलीफ नहीं देते। भक्तिमार्ग में तो बहुत तुमने पैसे बरबाद किये हैं। पेट कोई जास्ती नहीं खाता है। बाकी उल्टा–सुल्टा खर्चा करते हैं। भगवानोवाच्य है कि मैं तुमको बहुत सहज ज्ञान सुनाता हूं। यह वही है वर्ल्ड की हिस्ट्री–जॉग्राफी। तुम बच्चे समझते हो कि करप्शन्स तो बहुत है। गवर्मेंट के ऑफीसर्स कितना कमाते हैं। वो धन–दौलत तो सब खतम हो जाना है। तुम विश्व का मालिक बन रहे हो तो कितनी खुशी होनी चाहिए। हम बाप से बेहद की बादशाही ले रहे हैं। कैसे?सो आकर समझो तो तुम पापात्मा से पुण्यात्मा बन जावेंगे। बाप को समझते नहीं हैं। यों हैं सभी बाप के। हे भगवान, हे गॉड कहते भी हैं ;परंतु जब सम्मुख आये तब समझा सकें। किसी को दुःख भी नहीं देना चाहिए। हंसी–मजाक में भी कोई को दुःख दिया तो भी नानसेंस हैं। बाप कहते हैं कि कब किसी को दुःख ना देना है। ऐसे ही फिर दिल से उतर जाते हैं। चार्ट रखने से ध्यान रहेंगे दुःख तो नहीं दिया। ओम।